# बिहार के 100 रत्न

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार सरकार

# बिहार के
# 100 रत्न

# बिहार के रत्न

परिकल्पना

**डॉ. सुखदा पांडेय**

प्रधान सम्पादक

**चंचल कुमार**

सम्पादक

**विनोद अनुपम**

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

# बिहार के 100 रत्न

© कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

वर्ष 2013

सम्पादन सहयोग : डा. महेश्वर प्रसाद सिंह, संयुक्त सचिव
संजय कुमार सिंह, सहायक निदेशक (संस्कृति)

डिज़ाइन : रमेश कुमार

प्रकाशक : सांस्कृतिक कार्य निदेशालय,
कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
कमरा न. 303, विकास भवन
जवाहरलाल नेहरु मार्ग, पटना 800 015

---

विनय कुमार, निदेशक, सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार द्वारा प्रकाशित एवं लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना 4 द्वारा मुद्रित

# संदेश

खगोल, चिकित्सा, दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, स्थापत्य, साहित्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला,........ सभ्यता और संस्कृति के किसी भी क्षेत्र के शीर्ष का आप स्मरण करें, बिहार वहां अवश्य उपस्थित रहेगा। मानव सभ्यता के उद्भव के इतिहास की चर्चा बिहार के बगैर पूरी नहीं हो सकती। ज्ञान का अजस्त्र श्रोत सदियों से बिहार की पहचान रही है और आज भी है। आश्चर्य नहीं कि धनुर्विद्या की शिक्षा के लिए महर्षि विश्वामित्र भगवान राम को भी इसी बिहार की धरती पर लेकर आते हैं । बिहार में ही गौतम बुद्ध को ज्ञान की ज्योति प्राप्त होती है। राजा जनक को भी हम याद करते हैं तो उनके दर्शन ज्ञान के कारण। गीता ने उन्हें योगियों में विख्यात और जीवन मुक्त, स्थितिप्रज्ञ घोषित किया है। राजा जनक का राज्य अपनी समृद्धि से ज्यादा इसलिए उल्लेखनीय माना जाता है कि उन्हीं की राजसभा में वह प्रसिद्ध ज्ञान संवंधी शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें याज्ञवल्क्य ने अन्य विचारकों को तो परास्त किया था, लेकिन उसी शास्त्रार्थ में ब्रह्मवादिनी गार्गी ने उन्हें निरूत्तर कर दिया था। बिहार में ज्ञान की यह परम्परा किसी एक व्यक्ति, किसी एक काल तक सीमित नहीं थी, यह निरंतर प्रवाहमान रही।

'अम्बपाली की राज्य के प्रति समर्पित नृत्य की याद करें या सैयद रजा के सितार की, दरभंगा के ध्रुपद के सुर की गूंज हो या 'पटना कलम' के सधे हुए हाथों की, बिस्मिल्लाह खान की शहनाई की याद हो या भिखारी ठाकुर के आमजन को समर्पित नाटकों की'। कला और ज्ञान की एक अजस्त्र धार का प्रतीक है बिहार। इस निरंतर प्रवाहमान गंगा से 100 बूंदों का चुनाव वाकई असंभव है,हम मानते हैं कि बिहार के ज्ञान की परंपरा को आगे बढाने में लाखों लोगों का महत्वपूर्ण योगदान है।ज्ञान के इस अथाह सागर के बीच से मात्र 100 रत्नों के चुनाव में, विभाग ने, संपादक ने और लेखकों ने यह चुनौती स्वीकार की। उनके इस श्रमसाध्य और सफल प्रयास की हम सराहना करते हैं। हमारा यह परम विश्वास है बीते 100 वर्षों के समग्र इतिहास, सांस्कृतिक जीवन और कला के क्षेत्र में बिहार के योगदान को समझने-परखने में यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और सार्थक सिद्ध होगी।

शुभकामनाएं

सुखदा पाँडेय

( सुखदा पाँडेय )

**मंत्री**

**कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार**

# दो शब्द

बिहार ने अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर लिए हैं। हालांकि यह भी सच है कि बिहार का इतिहास 3000 वर्षों से भी अधिक प्राचीन माना जाता है। और उल्लेखनीय यह है कि हर समय, हर काल में बिहार देश को सांस्कृतिक महत्व दिलाता रहा। वास्तव में कह सकते हैं बिहार पृथ्वी का शायद एकमात्र ऐसा भू-भाग होगा, जिसकी स्मृति के साथ इसका भौगोलिक परिदृश्य साकार नहीं होता. साकार होती है यहां की कला, यहां की संस्कृति, यहां का ज्ञान। दुनिया जहां अपने ऐतिहासिक धरोहर के रुप में राजाओं के महल और अट्टालिकाओं को सुरक्षित रखती है, हमने ज्ञान के केन्द्र नालंदा और विक्रमशिला को अपनी पहचान बनाए रखा है। आश्चर्य नहीं कि बिहार को हम याद करते हैं तो याद आते हैं जनक जैसे महर्षि, अशोक जैसे सम्राट, चन्द्रगुप्त जैसे शासक, चाणक्य जैसे राजनीतिज्ञ, पाणिनी जैसे व्याकरणाचार्य, चरक जैसे चिकित्सक, मैत्रयी जैसी विदुशी, विद्यापति जैसे कवि और भिखारी ठाकुर जैसे रंगकर्मी। समय-समय पर बिहार विभिन्न झंझावातों से गुजरता रहा,लेकिन कला और कलाकार की परंपरा हर हाल में बिहार ने जीवंत रखी। यही बिहार की वास्तविक ताकत है जो हर समय,हर हाल में हमें ऊर्जस्वित रखती है।

बिहार के 100 रत्न में हमने बिहार की उसी ताकत के पुनर्स्मरण की कोशिश की है। संस्कृति के विभिन्न रुपों साहित्य, रंगमंच, पेंटिंग, सिनेमा,संगीत और समाज सेवा के क्षेत्र में अपने समर्पण और कोशिशों से बिहार को देश और दुनिया में पहचान दिलाने वाले 100 व्यक्तित्वों को एक साथ देख पाना वाकई एक विलक्षण अहसास देता है। विश्वास है यह पुस्तक हमेशा हमें ऊर्जस्वित रख सकेगी।

निश्चित रुप से जहां गांव-गांव में विभूतियां हों वहां 100 का चयन सहज नहीं, लेकिन किसी भी पुस्तक की सीमा होती है। बिहार के 100 रत्न की भी सीमा रही, कई महत्वपूर्ण नाम छूट गए,लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं कि उनके अवदान को हम पहचान नहीं सके। वास्तव में यह शुरुआत है, हमारी कोशिश अपने संपूर्ण गौरवशाली बौद्धिक परंपरा के दस्तावेजीकरण की है।

आशा है बिहार के 100 रत्नों के अमूल्य अवदान हमारे सामाजिक सांस्कृतिक विकास में अपनी सार्थकता प्रमाणित करेंगे।

(चंचल कुमार)
सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

बिहार के 100 रत्न

# भूमिका

बिहार का सांस्कृतिक इतिहास उतना ही पुराना है जितना राजनीतिक इतिहास। इसलिए साधारण के शैलचित्र और चिरानन्द के अवशेष से लेकर मगध-मौर्यकालीन अन्वेषक, नालंदा के ऐतिहासिक विश्वविद्यालय से लेकर आज सुबोध गुप्ता तक बिहार देश और दुनिया के सांस्कृतिक जगत में अपना योगदान दे रहा है।

बिहार के सांस्कृतिक इतिहास लेखन पर कोई गम्भीर काम आज तक नहीं हुआ है कि इस देश के सांस्कृतिक विकास में राज्य की भूमिका स्थापित हो सके। देश के बड़े-नामचीन इतिहासकारों ने कुछ लिखा भी तो बिहार उपेक्षित होता रहा है। यही कारण है कि जब भारतीय इतिहास का सबाल्टर्न इतिहासकार लिखते हैं तब जाकर बिहार की भूमिका रेखांकित होती है।

इतिहास के वर्गीकरण के हिसाब से तीनों काल यानी प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल में बिहार की सांस्कृतिक भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण रही है। कला-साहित्य का विकास, संस्थानों और परम्पराओं का विकास और निर्वाह होता रहा है। विकास और निर्माण की प्रक्रिया के पीछे किसी-न-किसी व्यक्तित्व का हाथ होता ही है। इन व्यक्तित्वों पर और उनका लेखन, कैनवास पर चमकता रहा है। चाहे वे चंद्रगुप्त हों, सम्राट अशोक हों, चाणक्य, आर्यभट्ट, चरक, गार्गी, बुद्ध हों, महावीर हों, शेरशाह हों पर औपनिवेशिक काल से लेकर आज तक के बिहार के सांस्कृतिक अवदान को व्यक्तित्वों के जरिये परखने की कोशिश कम हुई है।

बिहार अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर चुका है। 1912 में बंगाल से अलग होकर एक राज्य के रूप में आना सचमुच ऐतिहासिक अवसर था। एक खास सांस्कृतिक परिधि के भीतर के लोगों को स्वशासन मिलने से उसकी अपनी अस्मिता बनती और उभरती है। औपनिवेशक शासन के शोषण-दोहन के बीच और आजादी के बाद विभिन्न तरह के राजनीतिक-सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्षों के दौरान हजारों-लाखों व्यक्तियों ने अपना रचनात्मक योगदान दिया होगा। उनमें से 100 महानुभावों के योगदान को सामने रखने की समझ के फलस्वरूप उनका संकलन अलग से किया जा सकता है। हमारी कोशिश यही रही है कि इसमें अपनी प्रतिभा से दैदीप्यमान महानुभावों के साथ गाँव की धूसर मिट्टी में हवाई चप्पल पहनकर और कई बार नंगे पांव चलनेवाले और भीड़ में अंतिम पंक्ति में खड़े होनेवाले व्यक्तियों को भी शामिल किया जाए। सुधा वर्गीज और दशरथ मांझी ऐसे ही नाम हैं। कम उम्र में गुजर जानेवाले मधुकर आनंद और सैयद सिकंदर हुसैन ऐसे रत्न थे जो असमय काल कलवित हो गए। कम उम्र में ही उन्होंने बिहार के कला जगत को एक नवीन दिशा देने का कार्य किया था।

बिहार के कुछ महत्वपूर्ण सुपरिचित और गुमनाम नायकों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर परिचयात्मक आलेखों का संग्रह यह पुस्तक है। इनपर नजर डालकर बिहार के सांस्कृतिक कैनवास को समझने में अगर मदद मिली तो हम अपने इस छोटे से प्रयास को सार्थक मानेंगे।

**विनय कुमार**
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
बिहार, पटना

# सम्पादकीय

स्वभाव से संस्कृति कर्मी और शिक्षाविद डॉ. सुखदा पाण्डेय ने एक सहज बात-चीत में कहा था, यह गर्व की बात है कि बिहार की पहचान आज भी बुद्ध और महावीर से होती है, नालन्दा और विक्रमशिला से होती है, विद्यापति और अम्बपाली से होती है। लेकिन हमें यह रेखांकित करना भी महत्वपूर्ण है कि  अपनी इस ऐतिहासिक परम्परा का निर्वाह हम किस हद तक कर सके हैं। इसके लिए जरूरी है बिहार के समकालीन इतिहास से ऐसे व्यक्तित्वों को रेखांकित किया जाना जिन्होंने साहित्य, कला और संस्कृति की परम्परा को आगे बढ़ाकर बिहार को एक विशिष्ट पहचान दी। वस्तुतः यही बात-चीत "बिहार के सौ रत्न" जैसी महती परियोजना की पृष्ठभूमि बनी।

बिहार के समकालीन इतिहास का अर्थ बिहार की स्वतंत्र राजनीतिक पहचान के सौ वर्षों का इतिहास माना जा सकता है। हांलाकि बिहार का अस्तित्व मार्च 1912 के पूर्व भी था, जब बिहार और उड़िसा को मिलाकर दिल्ली के शाही दरबार में बिहार के रूप में नये प्रान्त के गठन की स्वीकृति दी गई, जिसकी राजधानी पटना बनायी गई। बिहार के इस नये स्वरूप की स्वीकृति ने बिहार को नई पहचान ही नहीं, नई ऊर्जा भी दी। इतिहास गवाह है कि बिहार के गठन के साथ ही अंग्रेजों के साथ बंगाल के दोहरे शोषण से इसे मुक्ति मिली। जाहिर है आजादी के राजनीतिक संघर्ष की जद्दोजहद के बीच भी बिहार अपनी परम्परा-गत सांस्कृतिक पहचान के लिए पूरे आत्मविश्वास के साथ सक्रिय हो गया। बिहार की रचनात्मकता जो औपनिवेशिक वातावरण में सुप्त होती जा रही थी, अपनी पहचान की जीत के साथ खड़ी होती दिखी। आश्चर्य नहीं कि बिहार के बीते सौ वर्षों के सांस्कृतिक इतिहास के पृष्ठ पलटने की कोशिश करें तो प्रतिभा और समर्पण का विलक्षण संयोग दिखता है। वास्तव में जिसे कुछेक पृष्ठों में समेटना सहज नहीं।

लेकिन किसी भी पुस्तक की सीमा होती है। इस पुस्तक के लिए भी सीमा तय की गई। 100 वर्षों के इतिहास से 100 सांस्कृतिक रत्न। संस्कृति के अनन्त विस्तार से 100 महापुरूषों का चयन वाकई एक कठिन चुनौती थी, लेकिन इसे हमने स्वीकार किया। संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में जिनका आम-जीवन से सीधा सरोकार था साहित्य, शिक्षा, संगीत, नृत्य, पेन्टिंग, रंगमंच, सिनेमा, और समाज-सेवा के क्षेत्र हमने इसके लिए निर्धारित किये। नामों के चयन में उनकी उपलब्धियों के साथ बिहार के उनके सम्पर्क और बिहार के लिए उनके अवदान पर भी विशेषज्ञों ने गौर करने की कोशिश की है। अपने अपने क्षेत्र के विशेषज्ञों से सम्भावित नामों पर चर्चा की गई। सम्पादन और संशोधनों के कई दौर के बाद नामों पर माननीय मंत्री और विभागीय अधिकारियों की सहमति हासिल की गई।

यहाँ नामों के क्रम में बगैर किसी वरिष्ठता और विधा को तवज्जो दिये अपनी सहूलियत के लिए हमने हिन्दी के वर्णाक्षर को ध्यान में रखने की कोशिश की है। वास्तव में यह कोई शोध ग्रंथ नहीं, ना ही हमने इसे विश्वकोष बनाने की कोशिश की है। यह उन्हें एक सम्मान है, जिन्होंने बिहार को सम्मानित किया। यह अपने आपको गौरवान्वित करने की कोशिश है। निश्चय ही इस पुस्तक से गुजरते हुए अपने आपको इस महान परम्परा से जोड़कर देखना हमारे लिए, प्रत्येक बिहारी के लिए सुखद होगा।

**विनोद अनुपम**

# अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| 1. | अनिल कुमार मुखर्जी | 2 |
| 2. | अनूपलाल मंडल | 4 |
| 3. | अमरनाथ झा | 6 |
| 4. | अशोक कुमार | 8 |
| 5. | आनंदी प्रसाद बादल | 10 |
| 6. | आरसी प्रसाद सिंह | 12 |
| 7. | इन्द्र किशोर मिश्र मल्लिक | 14 |
| 8. | ईश्वर चन्द्र गुप्ता | 16 |
| 9. | ईश्वरी प्रसाद वर्मा | 18 |
| 10. | उपेन्द्र महारथी | 20 |
| 11. | कामेश्वर पाठक | 22 |
| 12. | काशी प्रशाद जायसवाल | 24 |
| 13. | किशोर कुणाल | 26 |
| 14. | कुमुद शर्मा | 28 |
| 15. | कुमकुम | 30 |
| 16. | कुमार विमल | 32 |
| 17. | कृष्ण कुमार कश्यप | 34 |
| 18. | गजेन्द्र नारायण सिंह | 36 |
| 19. | सर गणेश दत्त | 38 |
| 20. | गणेश प्रसाद सिन्हा | 40 |
| 21. | गोदावरी दत्त | 42 |
| 22. | गोपाल सिंह नेपाली | 44 |
| 23. | गंगानाथ झा | 46 |
| 24. | गंगाशरण सिंह | 48 |
| 25. | चक्रवर्ती देवी | 50 |
| 26. | चतुर्भुज | 52 |
| 27. | चन्द्रकांत लालादास | 54 |
| 28. | चित्रगुप्त | 56 |
| 29. | जगदम्बा देवी | 58 |
| 30. | जगदीश कश्यप | 60 |
| 31. | जयकान्त मिश्र | 62 |
| 32. | जयनारायण सिंह | 64 |
| 33. | जयप्रकाश नारायण | 66 |
| 34. | ज़ाकिर हुसैन | 68 |


बिहार के 100 रत्न

| | | |
|---|---|---|
| 35. | जानकी वल्लभ शास्त्री | 70 |
| 36. | दशरथ मांझी | 72 |
| 37. | दामोदर प्रसाद अम्बष्ट | 74 |
| 38. | नन्द लाल वसु | 76 |
| 39. | नलिन विलोचन शर्मा | 78 |
| 40. | नागार्जुन | 80 |
| 41. | प्यारे मोहन सहाय | 82 |
| 42. | प्रकाश झा | 84 |
| 43. | प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'' | 86 |
| 44. | प्रभावती देवी | 88 |
| 45. | पीर मोहम्मद मुनीस | 90 |
| 46. | फणीश्वर नाथ रेणु | 92 |
| 47. | बटेश्वर नाथ श्रीवास्तव | 94 |
| 48. | बिस्मिल्ला खां | 96 |
| 49. | वीरेश्वर भट्टाचार्या | 98 |
| 50. | भिखारी ठाकुर | 100 |
| 51. | मधुकर आनन्द | 102 |
| 52. | महासुंदरी देवी | 104 |
| 53. | महेन्द्र मर्लगिया | 106 |
| 54. | महेन्द्र मिसिर | 108 |
| 55. | मोहम्मद हादी | 110 |
| 56. | मोइनुल हक | 112 |
| 57. | यदुनाथ सरकार | 114 |
| 58. | यशोदा देवी | 116 |
| 59. | योगेन्द्र मिश्र | 118 |
| 60. | रमानाथ झा | 120 |
| 61. | राधामोहन प्रसाद | 122 |
| 62. | राजकमल चौधरी | 124 |
| 63. | राधिकारमण प्रसाद सिंह | 126 |
| 64. | रामगोपाल बजाज | 128 |
| 65. | रामगोपाल शर्मा रूद्र | 130 |
| 66. | राम चतुर मल्लिक | 132 |
| 67. | रामधारी सिंह दिनकर | 134 |


अनुक्रम

अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| 68. | रामनाथ गोयनका | 136 |
| 69. | रामजी मिश्र मनोहर | 138 |
| 70. | रामवृक्ष बेनीपुरी | 140 |
| 71. | रामलोचन शरण | 142 |
| 72. | रामशरण शर्मा | 144 |
| 73. | रामेश्वर सिंह कश्यप | 146 |
| 74. | डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह | 148 |
| 75. | विजया मूले | 150 |
| 76. | विन्देश्वर पाठक | 152 |
| 77. | विंध्यवासिनी देवी | 154 |
| 78. | विश्वनाथ प्रसाद वर्मा | 156 |
| 79. | विश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी | 158 |
| 80. | विश्वबंधु | 160 |
| 81. | श्यामलानंद | 162 |
| 82. | श्याम शर्मा | 164 |
| 83. | शत्रुघ्न सिन्हा | 166 |
| 84. | शारदा सिन्हा | 168 |
| 85. | शाद अज़ीमाबादी | 170 |
| 86. | शोभना नारायण | 172 |
| 87. | शिवेन्द्र सिन्हा | 174 |
| 88. | डॉ. शिवनारायण सिंह | 176 |
| 89. | शिवपूजन सहाय | 178 |
| 90. | सच्चिदानंद सिन्हा | 180 |
| 91. | स्वामी सत्यानंद सरस्वती | 182 |
| 92. | सहजानंद सरस्वती | 184 |
| 93. | सैयद हसन अस्करी | 186 |
| 94. | सिकन्दर हुसैन | 188 |
| 95. | सियाराम तिवारी | 190 |
| 96. | सीता देवी | 192 |
| 97. | सुधा वर्गीज | 194 |
| 98. | सुभद्र झा | 196 |
| 99. | हरि उप्पल | 198 |
| 100. | हरिमोहन झा | 200 |

चतुर्भुज

डॉ. चतुर्भुज का पूरा नाम चतुर्भुज नारायण था। उनका जन्म बिहार के नालन्दा जिले के बिहार शरीफ में 15 जनवरी, सन् 1928 ई. को हुआ। चतुर्भुज ने आठवीं के बाद स्कूल कॉलेज का मुंह नहीं देखा। परन्तु, विद्यापिपासु चतुर्भुज को जब भी समय अनुकूल मिला तब-तब स्वतंत्र छात्र के रूप में अपनी शैक्षणिक योग्यता बढ़ाते चले गये। टी.एच. ई. हाई स्कूल, खुशरूपुर से मैट्रिक, बी.एन. कॉलेज से आई.ए, एवं बी.ए, की डिग्री पटना विश्वविद्यालय से प्राप्त किया। एम. ए. की डिग्री पाली और बौद्ध साहित्य में नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा से हासिल किया। इनके एम.ए, करने के पीछे बहुत ही रोमांचकारी कहानी है। चतुर्भुज के पिता रेलवे में मुलाजिम थे, रेलवे में टी.टी.ई. की नौकरी मिल गई। बख्तियारपुर - राजगीर रेलखण्ड पर नौकरी के दौरान आते- जाते अक्सर एक साधु को ट्रेन में आवागमन करते देखा करते थे। एक दिन ट्रेन में ही साक्षात्कार हुआ, और पता चला कि वह साधु अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बौद्ध विद्वान भिक्षु जगदीश कश्यप हैं।

संत भिक्षु के सलाह एवं सहयोग से ही वह नव नालन्दा महाविहार से एम.ए, की डिग्री प्राप्त कर पाये। चतुर्भुज को अध्ययन एवं परीक्षा देने के लिए रेलवे से छुट्टियों की स्वीकृति भी भिक्षुजी ने ही दिलाई। उतना ही नहीं उनके अध्ययन पर हो रहे खर्च का वहन भी उन्होंने ही किया। नवनालन्दा महाविहार में रह कर उन्होंने पाली ग्रन्थों का देवनागरी में सम्पादन कार्य किया। 1959 में उनका चयन आकाशवाणी पटना में कार्यक्रम अधिशासी के पद पर हो गया। चतुर्भुज ने आकाशवाणी सेवा में अनेक रेडियो नाटक, रेडियो फीचर एवं बौद्ध साहित्य पर आधारित वार्ताएं लिखीं। इसके पूर्व 1952 ई. में ही चतुर्भुज रंगमंच को अपने रंग में रंगने के लिए 'मगध कलाकार' नामक सांस्कृतिक संस्था की स्थापना कर चुके थे। इसके तहत निरंतर ग्रामीण अंचलों में नाट्य प्रदर्शन करते रहे। भारतीय सिनेमा एवं रंगमंच के महान् कलाकार पृथ्वीराज कपूर अपने पृथ्वी थियेटर के एक दल के साथ पुत्र राज कपूर एवं शशि कपूर के लिये उनका नाटक 'कलिंग विजय' देखने बख्तियारपुर गये थे। पृथ्वीराज कपूर, चतुर्भुज एवं उनके कलाकार दल से बेहद प्रभावित हुए और कई स्थानीय कलाकारों को अपने साथ काम करने का मौका दिया।

'मगध कलाकार' द्वारा 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) 1957 ई. के उपलक्ष्य में देश की राजधानी दिल्ली में पहली बार बिहार से प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रदर्शित की गई। और भारत सरकार से पुरस्कृत हुई। ठीक उसी प्रकार बिहार की राजधानी पटना में भी झांकियों की परम्परा इन्हीं की देन है। सन् 1979 ई. में पटना के तत्कालीन जिलाधिकारी आर. एन. सिन्हा के आग्रह पर चतुर्भुज ने पुन: मगध कलाकार एवं आकाशवाणी पटना के कलाकारों के सहयोग से 'कुंवर सिंह' की झांकी प्रस्तुत की। जिसकी परम्परा आजतक निरंतर निभायी जा रही है। उन दिनों नाट्य मंचन पर मनोरंजन कर देना एवं जिलाधिकारियों का आदेश लेना अनिवार्य होता था। इन्होंने ही तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर से निवेदन कर मनोरंजन कर एवं जिलाधिकारी के आदेश से मुक्ति दिलयी। 31 जनवरी 1986 ई. को चतुर्भुज आकाशवाणी दरभंगा के केन्द्र निदेशक के पद से सेवानिवृत हुए। तत्पश्चात उनके ही सुझाव पर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के तत्कालीन कुलपति डॉ. सी. डी. सिंह ने एम. ए. स्तर पर 'नाट्यशास्त्र' का एक स्वतंत्र विषय के रूप में अधययन शुरू करवाया। 2 फरवरी, 1986 ई. से इस विषय के प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में वे अगले ढाई वर्षों तक सेवारत रहे। बाद में इन्होंने ही इन्टरमीडिएट स्तर पर नाट्यशास्त्र को स्वतंत्र विषय के रूप में स्वीकृति दिलाई।

चतुर्भुज अपनी नौकरी से अवकाश प्राप्त करने के दस साल बाद यानि सन् 1996 ई. में मगध विश्वविद्यालय, बोधगया से 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक - एक अध्ययन' पर शोध कर पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। इस नाटककार का निधन 11 अगस्त 2009 ई. को हृदय गति रूक जाने से हो गया। जीवन के अन्तिम समय में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त वरिष्ठ रिसर्च फेलोशिप के अन्तर्गत रंगमंच के व्यावहारिक पक्ष पर 'नाट्य शिल्प विज्ञान' शीर्षक पुस्तक का लेखन कर रहे थे।

'मगध कलाकार' द्वारा 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) 1957 ई. के उपलक्ष्य में देश की राजधानी दिल्ली में पहली बार बिहार के प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रदर्शित की गई। और भारत सरकार से पुरस्कृत हुई। ठीक उसी प्रकार बिहार की राजधानी पटना में भी झांकियों की परम्परा इन्हीं की देन है।